दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 19.10.2019

प्रकाशनार्थ

रक्षाअध्ययन विभाग एवं महिला छात्रावा के सयुक्त तत्वावधान में
अतिथि व्याख्यान का आयोजन

विषय – 'उभरता भारत : चुनौतियॉ एवं सम्भावनाएँ'

आज दिनांक 19.10.2019 को रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग एवं छात्रावास के संयुक्त तत्त्वावधान में 'उभरता भारत : चुनौतियॉ एवं सम्भावनाएँ' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए श्री प्रफुल्ल केतकर प्रख्यात राष्ट्रवादी चिन्तक एवं सम्पादक अर्गनाईजर नई दिल्ली ने कहा कि भारत शोध नहीं बल्कि बोध का विषय है, लेकिन यह भाव से पैदा होता है और सही अर्थों में इसकी अनुभूति करनी पड़ती है। उभरते भारत के सन्दर्भ में इन्होंने कहा कि केवल भौतिक उपलब्धियों, नई तकनीकि, उद्योग ही आज के उभरते भारत के मूल आधार नहीं है, बल्कि यदि नये भारत की परिकल्पना को साकार करना है तो हमे पुराने भारत के विचारों को भी पुनर्स्थापित करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि उभरते भारत के वाहक आज के युवा हैं। भारत के सन्दर्भ में अनेक राष्ट्रों के विचारधाराएँ अलग थी। अंग्रेजों का मानना था कि भारत अनेक राष्ट्रों का समुच्चय है। लेकिन इनका मानना था कि भारत चिरन्तन एक सतत् प्रवाही राष्ट्र है, केवल भूमि ही नहीं जो आज भी अपने मूल सिद्धान्तों पर कायम है। वैदिक ग्रन्थों में 300 बार राष्ट्र शब्द का उल्लेख हुआ है जिसमें प्रकृति और ब्रह्माण्ड की अवधारणाएँ एक समान बताई गई है। भारत में ऋतुका परिवर्तन चक्र तथा आयोजित होने वालो विभिन्नय तौहारों का आशय यह है कि हम आने वाले परिस्थितियों का मुकावला करने के लिए स्वयं को तैयार कर सकें। यह अकेला राष्ट्र है जहॉ विभिन्न विचारधाराओं में विरोधाभास के बाद भी भारत आज एक है। क्योंकि हमारी मूल सांस्कृतिक धारणा ही भारत की एकता का मूल आधार है। भारत अकेला राष्ट्र है जहॉ के धर्म और दर्शन भी मोक्ष के अलग–अलग मार्ग निर्धारित किए हैं। उसी प्रकार भारत में भी अलग–अलग विचारों को मानने वाले धर्म और त्योहारों के सम्पादन करने वाले चाहे वे उसे जिस रूप में मनाएँ बल्कि सब का गन्तव्य और लक्ष्य एक ही है सत्य की प्राप्ति। इसी लिए हमारे सभी ऋषि महर्षि आदिकाल से लेकर वर्तमान तक एक ही राष्ट्र के जागरण की परिकल्पना करते हैं। इन्होंने कहा कि भारत का समाज ही राष्ट्र है, समान अवधारणा का नाम ही भारत है, उसके स्वरूप और विचार अलग ही क्यों न हो और सही अर्थों में समाज जिस योजना को स्वीकार करता है वही सफल होता है अतः कोई भी योजना समाज के द्वारा और समाज के लिए होनी चाहिए। इन्होंने पुनः कहा कि इधर कुछ लोगों का मानना है कि

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

भारत में असहीष्णुता का भाव पैदा हुआ है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि असहीष्णुता आती कहा से है उनका मानना था विचारों में विभेद और उनको स्वीकार न करने की प्रवृत्ति ही असहीष्णुता का भाव पैदा करती है , इसलिए आवश्यक है कि हम सभी को स्वीकार करें तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति की सुरक्षा करें। इसी संकल्पना पर भारत का अस्तित्व कायम रहेगा। इन्होंने पुनः कहा कि भारत को विकसित करने का मार्ग एक ही दिशा से नहीं जाता बल्कि अलग–अलग विचारधारओं और मार्गो से ही राष्ट्र का विकास सम्भव है और निश्चित रूप से भारत के संस्कृति के साथ–साथ इसके प्रकृतिको भी समझना होगा और उनकी रक्षा करनी होगी। आज पुरी दुनिया भारत को आशा के दृष्टि से देख रही है और उनका यह मानना है कि आज भारत ने दुनिया को धम्म का घोष, ध्यान और योग की प्रेरणा प्रदान कर विश्वशान्ति तथा आतंकवाद की समाप्ति एवं मानवाधिकार की रक्षा का संकल्प उठाया है, उसी के बल पर भारत पुनः अपने को विश्व गुरू के रूप में प्रतिष्ठापित करने में सफल होगा।

विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, आचार्य इतिहास विभाग दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय ने आज के कार्यक्रम की प्रस्ताविकी प्रस्तुत की। संचालन डॉ. राजशरण शाही ने तथा आभार ज्ञापन तथा अतिथियों का स्वागत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. शैलेष कुमार सिंह, डॉ. आर.पी. यादव, डॉ. इन्द्रजीत, डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह, डॉ. सुनीता श्रीवास्तव, श्री दीपक साहनी, प्रताप आश्रम अधीक्षक डॉ. बसन्त सिंह तथा छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

डॉ. मुरली मनोहर तिवारी
प्रभारी सूचना एवं जनसंपर्क